काल–चक्र–प्रवाह

उड़ा था एक दिन मैं भी इसी तरह एक दूरस्थ घोंसले से,
और बनाया था इस विशाल दरख़्त पर अपना एक घरोंदा ।

बुना था मिलकर तेरी माँ संग एक सुन्दर घोंसला,
तृण - तृण करके संजोया था एक अद्‌भुत सपना ।

आये थे फिर तुम असाधारण आनंद की पोटली लेकर,
मन भर आया था निर्मल, असीम प्रेम भरी सौगात पाकर ।

लेकिन, कभी तो घोंसला खाली होना ही था, ये जानता था,
काल चक्र प्रवाह एक दिन मुड़ना ही था, ये भी जानता था ।

फड़फड़ाते पंखों को कौन रोक सकता है, ये जानता था,
कलियों को खिलने से कौन थाम सकता है, ये भी जानता था ।

हरित तृण की गाठें सूख जाएँगी एक दिन, ये जानता था,
कर्त्तव्य निर्वहन कर मिट जाएँगी एक दिन, ये भी जानता था ।

कच्चा आम डाली से पककर गिरना ही है, ये जानता था,
तुम एक दिन उड़ जाओगे, ठीक मेरी ही तरह, ये भी जानता था ।

तुम्हारी उमंगों को दिशा देना हमारा कर्त्तव्य है, ये जानता हूँ,
हमारे संस्कारों की धरोहर बहुत मजबूत है, ये भी जानता हूँ ।

केवल हमारे घोंसले से ही तो निकल रहे हो, ये जानता हूँ,
डाली - डाली पर सुरों की छाप छोड़े हो, ये भी जानता हूँ ।

हर पत्ते की हलचल में तुम्हारा आभास होगा, ये जानता हूँ,
सावन की बूंदों में तुम्हारा संगीत मिलेगा, ये भी जानता हूँ ।

देखता हूँ आज तुझमें मैं, मेरे स्वयं की जीवंत प्रतिकृति को,
और मेरे इस खाली होते घोंसले में ब्रह्मण्ड की संपूर्ण कृति को ।

ऐसा हो सकता है कि हम-तुम अब वर्षों दूर रहेंगे, लेकिन,
याद रहे, उसी स्त्रोत-पिंड भास्कर से दोनों ऊर्जित-सिंचित रहेंगे।

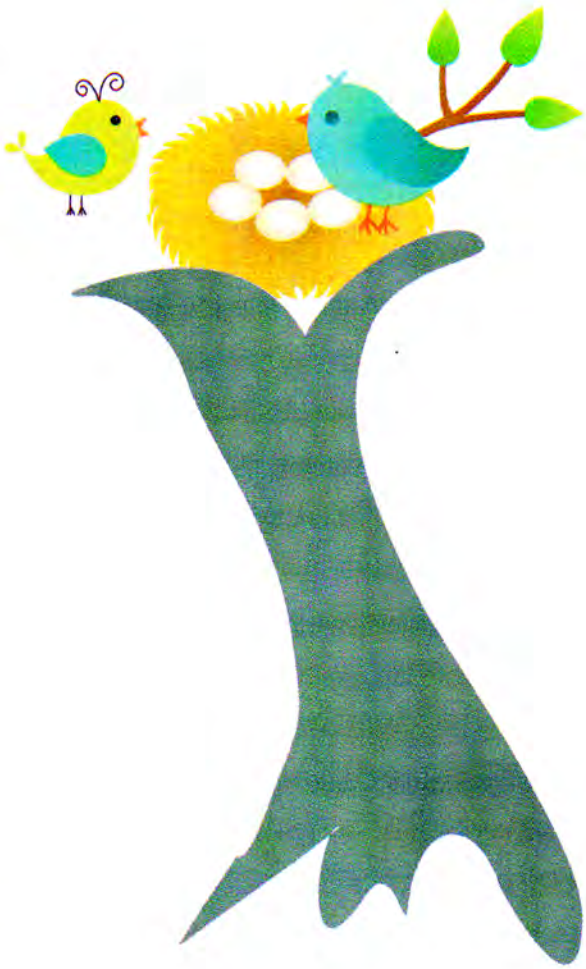

संभल कर उड़ो, साकार करो तुम्हारे सभी सपनों को,
आनंदित, प्रफुल्लित हो, आत्मसात करो इस संपूर्ण धरा को ।

समझो क्या है शिल्पकार की परिकल्पना, योजना, और संरचना,
घोंसले बनवाने और उनके खाली होने की अविरल अभिकल्पना।

डॉ. समीर खांडेकर
यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग